पाठ्यक्रम में शामिल करने के बाद माध्यमिक शिक्षा–मण्डल की पाठ्यचर्या समिति ने इसे हिन्दी विषय में शामिल करने का फैसला किया है, इसका पाठ्यक्रम भी तय कर लिया गया है।

वेस्टइण्डीज वन डे तथा टेस्ट सीरीज में पराजित–भारत ने तीन टेस्ट मैचों की सीरीज में वेस्टइण्डीज को 2–0 से हराकर उसके खिलाफ 63 वर्षो में घरेलू मैदान पर तीसरी सीरीज जीत ली। भारत ने वेस्टइण्डीज के खिलाफ अब तक 88 टेस्टों में 14 बार जीत दर्ज की है, जबकि ओवर ऑल 458 टेस्टों में 112 जीत दर्ज की हैं। 5 ओ.डी.आई. मैचों की सीरीज भी भारत ने 4–1 से जीत ली।

अब घर बैठे दे सकते हैं परीक्षा–अब कोई छात्र देश के किसी दूर–दराज इलाके में बैठकर कोई परीक्षा ऑन–लाइन दे सकेगा। मानव –संसाधन–विकास मन्त्री कपिल सिब्बल ने ऑन–लाइन परीक्षा–प्रणाली का पिछले दिनों उद्घाटन कर दिया। यह परीक्षा एक सॉफ्टवेयर के जरिये सम्पन्न होगी, जिसे नोएडा स्थित सेण्टर फार डेवलपमेण्ट ऑफ एडवांस्ड कम्यूटिंग ने तैयार किया है।

भारत–रत्न देश के लिए काम करने वाले को मिले–मशहूर फिल्म अभिनेत्री व नृत्यांगना हेमामालिनी ने म.प्र. स्थापना–दिवस–समारोह के अवसर पर एक पत्रकार वार्ता में कहा कि भारत–रत्न उसे मिलना चाहिए, जो देश के लिए काम करता है। अपने लिए काम करने वाले किसी व्यक्ति को भारत–रत्न नहीं देना चाहिए। यह बात सचिन और अभिताभ में से एक को भारत–रत्न चुनने के सवाल पर कही।

मिस्त्री होंगे टाटा के उत्तराधिकारी–

टाटा समूह को रतन टाटा का उत्तराधिकारी मिल गया है, साइरस पी. मिस्त्री टाटा संस के नये चेयरमेन होंगे। साइरस 43 साल के हैं, वे शापूरजी पलोनजी ग्रुप के मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। रतनटाटा 75 वर्ष के होने पर अगले दिसम्बर में रिटायर होंगे।

बोपन्ना–कुरैशी बने पेरिस के बादशाह–इण्डो–पाक एक्सप्रेस के नाम से मशहूर भारत के रोहन बोपन्ना और उनके पाकिस्तानी जोड़ीदार ऐसाम उलहक कुरैशी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए फ्रांस के जूलियन बेनेट्यु और निकोलस माहुत को लगातार सेटों में 6–2, 6–4 से धोकर पेरिस मास्टर्स टेनिस टूर्नामेण्ट जीत लिया।

मंगल पर है जिप्समयुक्त पानी–मंगल ग्रह पर चक्कर काट रहे नासा के एक यान को इस लाल ग्रह पर पानी तथा जिप्सम की मौजूदगी का सबसे पक्का सबूत मिला है। जिप्सम को प्लास्टर ऑफ पेरिस के नाम से जाना जाता है और यह चट्टानों से होकर बहने वाले पानी से बनता है।

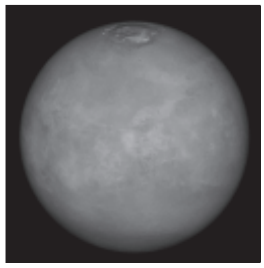

बोल्ट और पीयरसन सर्वश्रेष्ठ एथलीट–फर्राटा दौड़ के विश्व रिकार्डधारी जमैका के यूसेन बोल्ट और ऑस्ट्रेलिया की महिला धावक पीयरसन को अन्तर्राष्ट्रीय एथलेटिक्स महासंघ ने इस वर्ष के एथलीट ऑफ द ईयर ॲवार्ड से नवाजा है।

हाईकोर्ट के निर्देश 'यदि अंक बढ़े, तो 25 हजार जुर्माना दो'–म.प्र. उच्च न्यायालय ने न्यायमूर्ति संजय यादव की एकलपीठ ने एक छात्रा की याचिका का इस निर्देश के साथ पटाक्षेप कर दिया कि मा.शि.मं. उत्तर –पुस्तिकाओं का पुनर्मूल्यांकन करवाए। यदि इस प्रक्रिया में पूर्व के मुकाबले अंकों में वृद्धि होती है, तो छात्रा के हक में 25000/– रुपये का जुर्माना अदा किया जाये।

अग्नि–4 मिसाइल का परीक्षण सफल–भारत ने परमाणु–हथियार ले जाने में सक्षम अग्नि–4 बैलिस्टिक मिसाइल का सफल परीक्षण किया। लम्बी दूरी की यह अत्याधुनिक मिसाइल

सम्पादकीय

प्रिय विद्यार्थियो,

आज देश परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। आज सभी बदलाव चाहते हैं, परन्तु यह बदलाव कैसा होगा, किस प्रकार होगा? इससे देश को कितना फायदा और कितना नुकसान होगा? हमें इस पर काफी विचार की आवश्यकता है, क्योंकि किसी प्रकार का बदलाव हमारे भविष्य को बदल सकता है। आगे मैं अपने विचार निम्नलिखित पंक्तियों के माध्यम से आपके सामने रख रहा हूँ:–

अब राजाओं का राज नहीं,
नहीं कोई जमींदार है,
जनता के द्वारा चुनी गयी,
अब लोकशाही सरकार है।
यह जनता का कैसा शासन है,
जहाँ भरपेट मिलता नहीं राशन है,
यहाँ सड़कों पर भूखे बच्चे रोते हैं,
वहाँ महलों में न्योते होते हैं,
यहाँ भूख से बच्चे मर रहे,
वहाँ अनाज गोदाम में सड़ रहे,
आज भी सड़कों पर बच्चे होते हैं,
जो स्टेशन पर अधनंगे सोते हैं,
रेलों में बचपन पलता है,
जो नशे के दम पर चलता है,
जब नशे में भारत जलता है
तो क्या इसमें विकास का सपना पलता है?
यदि जनता की सरकार है,
तो फिर क्यों हाहाकार है,
कौन यहाँ दोषी है?
कौन यहाँ गद्दार है?
इसके पीछे किसका हाथ है?
कौन इसके साथ है?
यह कैसी समय की मार है?
घट–घट में भ्रष्टाचार है।
सुना है लोकपाल बिल आयेगा,
जो भ्रष्टाचार मिटायेगा,
जनता की आवाज को वो,
संसद तक ले जायेगा।
अब जनता जोर लगायेगी
और राजनीति घबरायेगी,
जनता के कदमों में वो,
नतमस्तक हो जायेगी,
यह मैं नहीं कहता,
मैंने तो बुद्धिजीवियों से सुना है,
भ्रष्टाचार का रास्ता तो,
जनता ने ही चुना है।
इसके पीछे जनता का ही हाथ है,
जनता ही इसके साथ है,
अब जनता की यही पुकार है,
भ्रष्टाचार ही शिष्टाचार है।
फिर कैसा ये बिल आयेगा
जो भ्रष्टाचार मिटायेगा,
राजनीति के चंगुल में फँसकर,
ये भी पंगु बन जायेगा।
राजनीति की बात करें,
तो कुछ नेता चतुर सियार होते हैं,
जनता को पागल बनाने में,
बहुत होशियार होते हैं।
इन गन्दे नेताओं ने
राजनीति गन्दी कर डाली है,
घोटालों पे घोटालों ने,
देश में मन्दी कर डाली है।
फूट डालो और शासन करो,
यह आज भी उनकी नीति है,
आरक्षण का मुद्दा तो केवल,
वोट–बैंक की राजनीति है,
ईमानदारी और विकास की बातें करते हैं,
तो क्यों लोकपाल से डरते हैं,
अखण्डता की बातें करने वाले,
क्यों देश के टुकड़ों में विश्वास करते हैं।
जनता के पैसों की चोरी कर,
जिनके विदेशों में खाते चलते हैं,
इन गद्दारों के मन में क्या,
देश की उन्नति के सपने पलते हैं।

''धन से रहित होने पर भी जो व्यक्ति सन्तुष्ट है, वास्तव में वही सच्चा धनी है।''

प्रधानमन्त्री जी का पत्र

इस महान् देश के होनहार बच्चो!

आज शिक्षा दिवस है–अपने देश के पहले शिक्षामन्त्री मौलाना अबुल कलाम आजाद का जन्मदिन। इस वर्ष हम इस दिन से पूरे देश में 'शिक्षा का हक अभियान' शुरु करने जा रहे हैं।

मौलाना आजाद भी जब आपकी तरह ही एक छात्र थे, तब उन्होंने खूब मन लगाकर पढ़ाई की थी। पढ़ने–लिखने में उनकी लगन ऐसी बेमिसाल थी कि ग्यारह–बारह साल की छोटी–सी उम्र मे ही वे अपने से दोगुनी उम्र के लोगों के शिक्षक बन गये। बाद में वे पत्रकार बने, फिर देश की आजादी की लड़ाई में महात्मा गाँधी के साथी और जब देश आजाद हुआ, तो उन्होंने शिक्षामन्त्री के रूप में एक ऐसे भारत का सपना देखा, जहाँ हर नागरिक पढ़े–लिखे।

मेरे पास एक जादू है, जिससे आप बहुत बड़े काम कर सकते हैं। उस जादू का नाम है–शिक्षा। शिक्षा सिर्फ इसलिए ही नहीं जरूरी है कि पढ़–लिख जाने के बाद नौकरी मिल सकती है या समाज में आदर–सम्मान मिल सकता है। शिक्षा इसलिए जरूरी है कि पढ़–लिखकर हम एक नया संसार बना सकते हैं। शिक्षा जादू है, क्योंकि पढ़ने–लिखने के बाद हर इंसान का एक नया जन्म होता है।

शिक्षा हासिल करने के बाद मेरा भी एक नया जन्म हुआ था। मेरी स्कूली पढ़ाई एक गाँव में हुई। ऐसे मेरे गाँव में जहाँ बिजली नहीं थी। मिट्टी के तेल से जलने वाली ढिबरी की रोशनी में मैंने स्कूली पढ़ाई की है। तब मेरे गाँव में न तो कोई पक्की सड़क थी और न ही स्कूल जाने के लिए कोई तेज रफ्तार गाड़ी। मीलों पैदल चलकर मैं स्कूल पहुँचता था। मैंने अपनी तरफ से खूब मेहनत की ओर देश ने मुझे इस मेहनत का हमेशा बड़ा मीठा फल दिया। जीवन के इस सफर में, मैं जहाँ पहुँचा, अपनी पढ़ाई के कारण पहुँचा। इसीलिए मैं आपसे फिर कहता हूँ कि शिक्षा ऐसा जादू है, जिसके सहारे हम जहाँ चाहें वहाँ पहुँच सकते हैं।

मेरे बचपन में प्राथमिक शिक्षा न तो आज की तरह मुफ्त थी और न ही सभी बच्चों को आज की तरह शिक्षा पाने का अधिकार था। आज के भारत में बिना भेदभाव के शिक्षा सभी बच्चों का बुनियादी हक है। गाँधीजी ने कहा था कि किसी प्रकार की शिक्षा के लिए स्वस्थ जिज्ञासा और सवाल पूछते रहना परम आवश्यक है। आप खूब सवाल पूछिये, खूब जवाब माँगिये और मन लगाकर पढ़ाई कीजिये और आप सभी को आगे बढ़ने के अवसर मिलते जायेंगे।

आप भी पढ़–लिखकर नयी बुलन्दियों को छूएँ। मेरा प्यार व आशीर्वाद आपके साथ है।

–श्री मनमोहनसिंह

(नई दिल्ली 11 नवम्बर, 2011)

पत्र

सम्माननीय महोदय,

नवांकुर विद्यालय द्वारा प्रकाशित **'क्रमशः'** का वार्षिक अंक प्राप्त हुआ है। सम्माननीय प्राचार्य श्री शैलेन्द्र दीक्षित के मार्गदर्शन में 'क्रमशः' के माध्यम से रक्तदान हेतु जागृति एवं जानकारी अभिनन्दनीय है। रक्तदान पुनीत कार्य है।

'**क्रमशः**' का वार्षिक अंक विद्यार्थियों के चहुँमुखी विकास में नींव का पत्थर साबित होगा। दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ। मैं शाला के समस्त विद्यार्थियों के उज्ज्वल, यशस्वी जीवन की कामना करता हूँ। आपके मार्गदर्शन में नवांकुर विद्यालय ने उल्लेखनीय प्रगति की है। आपको हार्दिक शुभकामनाएँ!

–अतुल शाह

(बेतवा उत्थान–समिति, विदिशा)

''प्रेम से बोला गया एक शब्द अनेक दुःखी आत्माओं को शान्ति प्रदान कर सकता है।''

इस अवसर पर रासेयो की छात्राओं ने विभिन्न कक्षाओं में जाकर छात्र–छात्राओं को स्वच्छता से रहने की जानकारी दी व साफ–सफाई से रहने के विभिन्न लाभों के बारे में छात्रों को बताया। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन रासेयो के स्वयंसेवक प्रदीप राजपूत ने किया।

आयुषी के मॉडल का राष्ट्र-स्तर पर चयन

एस.एस.एल. जैन, कॉलेज विदिशा में दिनांक 12 से 14 नवम्बर 2011 तक आयोजित त्रिदिवसीय इंस्पायर विज्ञान–प्रदर्शनी में विद्यालय की छात्रा **कु. आयुषी तिवारी कक्षा–9** के मॉडल का चयन राष्ट्र– स्तरीय प्रदर्शनी के लिए किया गया है। कु. आयुषी ने **''अपशिष्ट प्रबन्ध''** विषय पर अपना मॉडल–प्रदर्शित किया, जिसे प्रदर्शनी में बहुत सराहना मिली।

उल्लेखनीय है कि इस प्रदर्शनी में जिले–भर के

602 मॉडलों में नवांकुर विद्यापीठ से तीन मॉडल क्रमशः **कु.उमा दाँगी कक्षा–10** ने **''सुनियोजित ग्राम व्यवस्था, कु. पायल जैन कक्षा–8** ने **''बाढ़–नियन्त्रण** तथा **कु. आयुषी तिवारी कक्षा–9** ने **''अपशिष्ट–प्रबन्ध''** विषय पर अपने–अपने मॉडल प्रदर्शित किये थे, इनमें से

31 मॉडलों को राज्य–स्तरीय प्रदर्शनी के लिए चुना गया। राज्य –स्तरीय विज्ञान –प्रदर्शनी का आयोजन 28,29 व 30 दिसम्बर को इन्दौर में किया गया, जिसमें कु. आयुषी के मॉडल का चयन राष्ट्रीय स्तर के लिए किया गया।

विज्ञान परियोजना में राज्य-स्तर पर भागीदारी

राष्ट्रीय बाल–विज्ञान कांग्रेस द्वारा जिला–स्तरीय विज्ञान–परियोजना (प्रोजेक्ट)–प्रतियोगिता का आयोजन उत्कृष्ट विद्यालय, विदिशा में किया गया, जिसमें विद्यालय से चार परियोजनाएँ शामिल हुईं। प्रथम परियोजना अभिषेक पटेल, रचित श्रीवास्तव, कार्तिक दुबे, पीयूष श्रीवास्तव एवं कु. पूजा जैन (सभी कक्षा–11 गणित) की थी, जिसका विषय था, ''भूमि की गुणवत्ता एवं अपशिष्ट प्रबन्धन'', द्वितीय परियोजना लोकेन्द्र रघुवंशी, मिलन श्रीवास्तव, विक्रम रघुवंशी, सौरभ रघुवंशी एवं विनोद कुमार सौजन्य (सभी कक्षा–11) की थी, जिसका विषय था–''जनसंख्या घनत्त्व का भूमि पर दबाव,'' तृतीय परियोजना अनुज दुबे, कमलेश बनोड़ीकर, अभिषेक कुशवाह, विनय सोनी एवं कु. चंचल भारद्वाज (सभी कक्षा–9) की थी जिसका विषय था– ''जैविक खाद से मिट्टी की गुणवत्ता बढ़ती है'' एवं चतुर्थ परियोजना डॉल्फिन विद्यालय के अभिषेक दाँगी, नितिन रिछारिया, शान्तनु शर्मा, अक्षय तिवारी एवं अक्षत शर्मा (सभी कक्षा–7) की थी, जिसका विषय था–''उर्वरकों का भूमि की गुणवत्ता पर दुष्प्रभाव।''

के छात्र–छात्राओं ने रक्तदान की रुचि जाग्रत करने के लिए ''रक्तदान महादान''नाटक की मनमोहक प्रस्तुति दी।

रक्त–सेवा–समिति के संस्थापक श्री राजेश तिवारी जी ने समिति की स्थापना के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। ज्ञात रहे कि नगर गंजबासौदा में विगत 11 वर्षों से गंजबासौदा रक्त–सेवा–समिति म.प्र. में संचालित है, जिसके अन्तर्गत अब तक 8500 लोगों के रक्त–समूह का परीक्षण किया जा चुका है और हजारों जरूरतमन्द लोगों को रक्त–दान किया जा चुका है। नागरिकों में स्वैच्छिक रक्त–दान की भावना जाग्रत करने के लिए समिति द्वारा गाँव और नगरों में निरन्तर ऐसे शिविरों का आयोजन किया जा रहा है। श्री तिवारी जी ने गंजबासौदा में बन्द पड़े ब्लड स्टोरेज को चालू करने के लिए विधायक महोदय से माँग की, जिसे विधायक महोदय ने आगामी माह से चालू करने की स्वीकृति प्रदान की।

इस अवसर पर विभिन्न प्रतिभाओं एवं रक्तदाताओं का सम्मान प्रतीक–चिह्न भेंट देकर किया तथा नवांकुर की मासिक–पत्रिका **'क्रमशः** के 50वें अंक का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया।

मुख्य अतिथि माननीय श्री हरिसिंह रघुवंशी जी ने कहा कि रक्तदान के सम्बन्ध में ऐसे शिविरों के माध्यम से भ्रान्तियाँ कम हुई हैं। उन्होंने 21000रु. का अनुदान प्रतिवर्ष नवांकुर के कमजोर वर्ग के छात्र–छात्राओं के लिए प्रारम्भ की गयी मित्र–योजना में प्रदान करने की घोषणा की। वहीं विशेष अतिथि कान्ति भाई शाह ने नागरिक–सेवा–समिति द्वारा 5000रु. का अनुदान इस योजना में देने की घोषणा की। उन्होंने नवांकुर की समाज सेवा के क्षेत्र में काम करने के लिए प्रशंसा की। अध्यक्ष महोदय माननीय श्री मोहन भावसारजी ने अपने सम्बोधन में कहा कि रक्त–सेवा–समिति के कार्यों से गंजबासौदा की पहचान पूरे प्रदेश में बनी है। आज के समय में विश्व में अनेक समस्याएँ हैं, तब ऐसे कार्यों से गंजबासौदा की मिसाल पूरी दुनिया में कायम हो जायेगी।

कार्यक्रम का संचालन–श्री सन्दीप रावत ने किया। कार्यक्रम के अन्त में रक्त–सेवा–समिति के अध्यक्ष श्री कृष्णकान्त शर्मा ने सभी अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कार्यक्रम के समापन की घोषणा की। अन्त में राष्ट्रगान का गायन सामूहिक रूप से किया गया।

'वाणिज्य के छात्रों के लिए सेमीनार का आयोजन'

विदिशा कें लैण्डमार्क गार्डन में रविवार 18 दिसम्बर, 2011 को कॉमर्स स्टडी सर्किल, भोपाल द्वारा वाणिज्य के छात्रों को कैरियर से सम्बन्धित गुर सिखाने के उद्देश्य से एक सेमीनार का आयोजन किया गया।

इस सेमीनार में स्थानीय नवांकुर उ.मा.वि. के वाणिज्य के 16 छात्रों ने विद्यालय के शिक्षक श्री पहलवानसिंह राजपूत व श्री अजीत सिंह बैस सहित भाग लिया। इस सेमीनार में भोपाल से आये C.A. श्री नीलेश माहेश्वरी, श्री नवनीत गर्ग, श्री मिथुन मालवीय तथा C.S. श्री दीपेश पाराशर भी उपस्थित थे।

सेमीनार में भोपाल से आये वक्ताओं ने छात्रों को वाणिज्य विषय के महत्त्व और C.A. C.S.. तथा C.W.A. की बढ़ती माँग से अवगत करवाया तथा इनकी सर्विसेज के बारे में छात्रों को विस्तृत जानकारी दी। भविष्य में नवांकुर के छात्रों के लिए इस सेमीनार का आयोजन नवांकुर–परिसर में करने का प्रस्ताव है।

डॉल्फिन स्कूल में धूमधाम से मना म.प्र. स्थापना–दिवस

म.प्र. स्थापना–दिवस के अवसर पर डॉल्फिन स्कूल में नाटक वह गीतों की मनमोहक प्रस्तुतियाँ बच्चों द्वारा दी

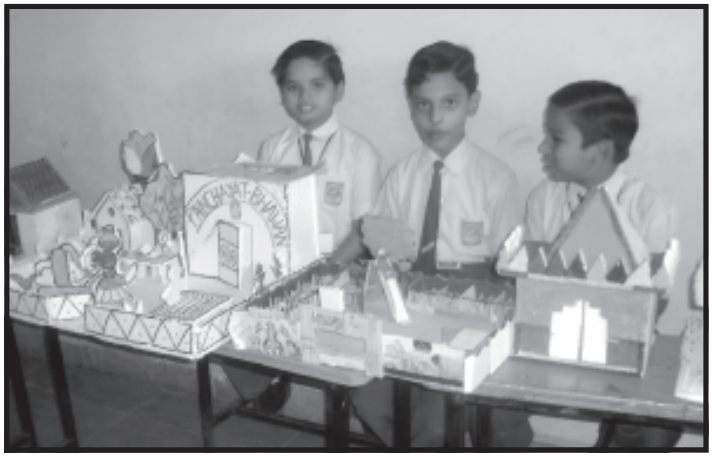

गयीं। इस अवसर पर बच्चों ने म.प्र. की प्राकृतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं ऐतिहासिक धरोहरों पर आधारित विभिन्न मॉडल एवं चार्ट भी तैयार किये, जिन्हें बनाने में विद्यालय के शिक्षक नीलेश जैन ने बच्चों का मार्गदर्शन किया।

छात्रों ने जाने अन्तरिक्ष के रहस्य

नवांकुर उ.मा.वि. में दो दिवसीय इन्दौर से आयी चलित विज्ञान–प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें हाईस्कूल और हायर सेकेण्डरी के छात्र–छात्राओं के समक्ष जादुई नल, पृथ्वी से सम्बन्धित जानकारी, सेटेलाइट का नमूना, चन्द्र–ग्रहण, सूर्य–ग्रहण, वर्षा–मापी–यन्त्र, जन्म–दिनांक के आधार पर चन्द्रमा की दशा,

पाइथागोरस–प्रमेय, माईक्रो एम्पीयर फ्रामटच, सूर्य–घड़ी, डिस्कवरी अन्तरिक्ष–यान, पिरामिड पहेली, चन्द्रकला–गणक आदि के मॉडलों का प्रदर्शन किया गया।

रात्रि में टेलीस्कोप की मदद से ब्रहस्पति व चन्द्रमा का अवलोकन भी छात्र–छात्राओं को करवाया गया, इसके अलावा अन्य ग्रहों की स्थिति की जानकारी छात्रों को दी गयी।

प्राथमिक व मिडिल के छात्र–छात्राओं को विज्ञान से सम्बन्धित जादू दिखाया गया। वहीं सेटेलाइट–प्रक्षेपण से सम्बन्धित फिल्म छात्र–छात्राओं को दिखायी गयी। इस प्रदर्शनी से छात्र–छात्राओं को अन्तरिक्ष व विज्ञान की कार्यप्रणाली से सम्बन्धित कई जानकारियाँ प्राप्त हुईं। इस प्रदर्शनी को देखने की छात्र–छात्राओं में बड़ी जिज्ञासा रही।

विभिन्न प्रश्नों के माध्यम से छात्रों ने अपने सामान्य ज्ञान को बढ़ाया। सभी प्रश्नों का आयोजकों द्वारा सन्तोषजनक उत्तर दिया गया।

''जिसकी आँख में वात्सल्य हो, उसे सारी दुनिया अच्छी लगती है,

मध्यप्रदेश स्थापना–दिवस के अवसर पर विदिशा में बधाई नृत्य की प्रस्तुति देते हुए विद्यालय के छात्र

मध्यप्रदेश सांस्कृतिक–उत्सव के पश्चात् नवांकुर के विद्यार्थियों का दल साँची–भ्रमण पर

विद्यालय का दल वित्तमन्त्री श्री राघवजी भाई द्वारा पुरस्कार प्राप्त करते हुए

अन्त्योदय मेले में विद्यालय की छात्राएँ माननीय मुख्यमन्त्री जी का पुष्पगुच्छ से स्वागत करते हुए

महावीर विहार में पधारे ऐलक श्री निशंकसागर जी महाराज के श्रीमुख से निकले वचनों को सुनते हुए नवांकुर के विद्यार्थी

सड़क–सुरक्षा–सप्ताह के अन्तर्गत यातायात नियमों की जानकारी लेते हुए नवांकुर के विद्यार्थी

''जो मन पर विजय पा लेता है, उसे वह सब कुछ प्राप्त हो जाता है, जिसकी उसे चाहत है।''

अन्तर्गत रासेयो के स्वंयसेवकों ने सोख्ता–गड्ढों का निर्माण–कार्य, सड़क–मरम्मत, जल–संवर्द्धन, श्रमदान तथा जन जागरूकता–रैली का आयोजन ग्रामवासियों की सहभागिता से किया। कला–प्रशिक्षण के पहले दिन 60 ग्रामीण बालिकाओं ने भागीदारी की और मेंहदी, रंगोली, सिलाई, कढ़ाई एवं बुनाई का प्रशिक्षण प्राप्त किया। यह प्रशिक्षण तीन दिन तक आयेाजित किया गया।

बौद्धिक सत्र के अन्तर्गत पर्यावरण एवं आसपास की स्वच्छता पर आधारित परिचर्चा आयोजित की गयी, जिसमें ग्रामवासियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। इस परिचर्चा में अतिथि के रूप में विद्यालय के आचार्य श्री सन्दीप नारायण जेतली व ओमप्रकाश श्रीवास्तव उपस्थित थे। सायंकाल में नवांकुर के संगीत–विद्यालय के छात्रों एवं स्वयंसेवकों द्वारा ग्राम में स्थित रामजी बाबा के मन्दिर–प्रांगण में भजन–संध्या का आयोजन भी किया गया।

चतुर्थ दिवस (25.12.11)–

राष्ट्रीय–सेवा–योजना के विशेष शिविर के अन्तर्गत चतुर्थ–दिवस, प्रातःकालीन जन–जागरूकता रैली निकाली गयी, जिसमें स्वयंसेवकों ने पम्फलेट्स के माध्यम से बेण्ड–दल के साथ विभिन्न रोगों के प्रति जन–जागरूकता के लिए प्रचार–प्रसार किया। बालिका कला–प्रशिक्षण की श्रृंखला में 70 ग्रामीण बालिकाओं ने मेंहदी,रंगोली, व कढ़ाई–प्रशिक्षण में भागीदारी की।

इसी दिन बौद्धिक सत्र के अन्तर्गत मुख्य वक्ता के रूप में योग–प्रशिक्षक लेफ्टिनेण्ट श्री सतीश जी शर्मा उपस्थित रहे, जिन्होंने योग के महत्त्व पर प्रकाश डालते

हुए, स्वयंसेवक व ग्रामवासियों को स्वस्थ व सुखमय जीवन जीने के गुर सिखाये, साथ ही स्वयंसेवकों के व्यक्तित्व विकास हेतु अपने विचार प्रस्तुत किये। इस अवसर पर उन्होंने पथरी रोग में प्रभावी पथरचटा के पौधे ग्रामवासियों को भेण्ट किये तथा इसके लाभों से समस्त ग्रामवासियों को परिचित कराया व विद्यालय –परिसर में पथरचटा के पौधे रोपित किये। इस कार्यक्रम में स्वयंसेवकों ने जहाँ प्रेरक गीतों के माध्यम से जन–जागरूकता का संचार किया, वहीं 'जागो ग्राहक जागो' विषय पर शानदार नाटक प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के अन्त में उपस्थित ग्रामवासी श्री नेतराम एवं चित्तरसिंह ने इकाई के कार्यों की भूरि–भूरि प्रशंसा की।

पंचम दिवस (26.12.11)–

राष्ट्रीय–सेवा–योजना इकाई के विशेष शिविर के अन्तर्गत पंचम–दिवस प्रातः काल में परियोजना कार्य के

''इस कलियुग में दौलत और सत्ता की लाठी जिसके पास है,

श्री पी.के. जागा, एल.बी.एस कॉलेज के रासेयो–अधिकारी श्री मनोज जी सक्सेना, एस.जी.एस. कॉलेज के रासेयो–अधिकारी श्री नेगीजी, शा.उत्कृष्ट उ.मा.वि. विद्यालय के रासेयो–अधिकारी श्री फिरोज खान उपस्थित रहे।

सभी उपस्थित अतिथियों ने ग्रामीण बालिकाओ के लिए चलाये जा रहे प्रशिक्षण के अन्तर्गत आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता घोषित किये व पुरस्कार प्रदान किये। इसी शृंखला में ग्रामीण बालकों के लिए आयोजित चित्रकला प्रतियोगिता के पुरस्कार भी प्रदान किये। नवांकुर की जिन स्वयंसेवक छात्राओं ने बालिका–कला प्रशिक्षण में अपना योगदान दिया, अतिथियों ने उन छात्राओं को भी प्रमाण–पत्र वितरित किये। विद्यालय की शिक्षिका श्रीमती अनिता गोप ने उपस्थित अतिथियों को कला– प्रशिक्षण के सम्बन्ध में जानकारी दी।

इस अवसर पर उपस्थित सभी अतिथियों ने शिविरीय गतिविधियों की भूरि–भूरि प्रशंसा की एवं कृषि कॉलेज के प्रोफेसर व कार्यक्रम अधिकारी श्री पी.के. जागा ने ग्रामीणों की कृषि–सम्बन्धी समस्याओं के निराकरण पर प्रकाश डाला।

पूर्व कार्यक्रम अधिकारी सन्दीप रावत ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के अन्त में छात्र आनन्द गुप्ता व गौरव साहू ने '**हम होंगे कामयाब**' गीत का प्रस्तुतिकरण किया।

सप्तम दिवस (28.12.11)–

राष्ट्रीय–सेवा–योजना इकाई शिविर के समापन–समारोह का भव्य आयोजन हुआ। समापन–समारोह के अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता S.A.T.I. पॉलीटेक्निक के प्राचार्य व N.S.S. के जिला संगठक डी.के. शर्मा ने की, जबकि मुख्य अतिथि के रूप में विधायक–प्रतिनिधि, जनपद पंचायत, श्री गोविन्द पटेल उपस्थित थे। विशेष अतिथि के रूप में भाजपा नगर–मण्डल–अध्यक्ष, श्री प्रेमनारायण विश्वकर्मा, S.A.T.I के प्रोफेसर, श्री प्रमोद गोयल व श्री कमलेश रघुवंशी तथा जनपद सदस्य, श्री महेश विश्वकर्मा भी उपस्थित थे। विद्यालय के प्राचार्य श्री शैलेन्द्र कुमार दीक्षित व वरिष्ठ–अध्यापक श्री रमेश शर्मा भी मंचासीन रहे। उपस्थित अतिथियों का स्वागत–भाषण कार्यक्रम–अधिकारी श्री हरिओम शरण शर्मा ने प्रस्तुत किया।

समापन–समारोह के इस अवसर पर शिविर के दौरान आयोजित सद्भावना क्रिकेट–मैच में विजयी ग्रामीण टीम को पुरस्कृत किया गया। साथ ही ग्रामीण युवकों को उनके सहयोग के लिए प्रमाण–पत्र भी वितरित किये गये। सांस्कृतिक कार्यक्रम की शृंखला में स्वयंसेवक आनन्द गुप्ता, कु. आकांक्षा शर्मा, कु. अंजलि आचार्य व नीतेश रघुवंशी ने प्रेरक गीतों का गायन किया। पर्दा–प्रथा पर आधारित गीत 'घूँघट' व भ्रष्टाचार पर कुठाराघात करता नाटक 'सदाचार का ताबीज' आकर्षण का केन्द्र रहा।' उपस्थित अतिथियों द्वारा स्वयंसेवकों को प्रमाण–पत्र भेण्ट किये गये। स्वयंसेवकों ने शिविर के दौरान सीखे गये अनुभवों को सभी के सामने रखा, तो वहीं दूसरी ओर ग्रामवासी भी अपने को रोक नहीं सके और अपने भावपूर्ण विचारों को सभी के सामने रखा।

इस अवसर पर सभी अतिथियों ने शिविर में किये जाने वाले कार्यों की भरसक सराहना की। मुख्य अतिथि श्री गोविन्द पटेल ने नवांकुर विद्यालय को नगर का पूर्ण

सकते हैं। जिस प्रकार विज्ञान संकाय के विद्यार्थी 12वीं के बाद पी.ई.टी./पी.एम.टी. दे सकते हैं, उसी प्रकार सी.पी.टी. भी दे सकते हैं। यदि किसी कारणवश कोई विद्यार्थी 12वीं की परीक्षा तक स्वयं को पंजीकृत नहीं करवा पाते हैं, तो वे विद्यार्थी सी.पी.टी. की परीक्षा में 60 दिन पूर्व भी स्वयं को पंजीकृत करवा सकते हैं। सी.पी.टी. की परीक्षा पास करने के पश्चात् विद्यार्थी आई.पी.सी.सी. (इण्टीग्रेटेड प्रोफेशनल काम्पीटेंस कोर्स) में पंजीकरण करता है, जिसके 9 माह पश्चात् आई.पी.सी.सी. की परीक्षा दी जा सकती है, किन्तु इस परीक्षा के पूर्व विद्यार्थी को अनिवार्य रूप से कम्प्यूटर ट्रेनिंग भी करना होती है जिसका आई.सी.ए.आई. के पास अलग से पंजीकरण करवाया जाता है। आई.पी सी.सी. की परीक्षा में दो ग्रुप होते हैं, जिसमें 4+3 विषय होते हैं। विद्यार्थी चाहे तो एक एक ग्रुप की परीक्षा 6 महीने के अंतराल से दे सकता है अथवा दोनों परीक्षा एक साथ भी दे सकता है। यदि विद्यार्थी फर्स्ट ग्रुप क्लियर करता है, तो विद्यार्थी 3 वर्ष की आर्टिकलशिप ज्वाइन करता है और आर्टिकलशिप के दौरान ही वह अपनी ग्रुप सेकण्ड की एक्जाम भी दे सकता है। आई.पी.सी.सी. के दोनों ग्रुप उत्तीर्ण होने के पश्चात् विद्यार्थी सी.ए. फायनल की परीक्षा हेतु पंजीकरण कर सकता है। ढाई वर्ष की आर्टिकलशिप पूर्ण करने के पश्चात् विद्यार्थी सी.ए. फायनल की परीक्षा दे सकता है। जब विद्यार्थी सी.ए.फायनल की परीक्षा मे उत्तीर्ण हो जाता है, तो उसे आई.सी.ए.आई. द्वारा संचालित ट्रेनिंग (जनरल मैनेजमेण्ट कम्युनिकेशन स्किल्स) करनी होती है, जिसके पश्चात् विद्यार्थी को आई.सी.ए.आई. के सदस्य के रूप में मान्यता मिल जाती है और अब वह पूर्ण रूप से सी. ए. बन जाता है। सी.ए. बन जाने के कम्पनी में सी.ई.ओ. के रूप में जॉब कर सकता है।

किसी कम्पनी में फायनेंशियल मेटर्स के लिए सी.ए. जितना महत्त्वपूर्ण है, उतना ही कम्पनी के एडमिनिस्ट्रेटिव मैटर्स के लिए सी.एस.। सी.एस. का पद कानूनी रूप में सभी कम्पनियों के लिए अनिवार्य भी है। देश एवं विदेशों को मल्टीनेशनल प्रायवेट एवं पब्लिक सेक्टर कम्पनियों में सी.एस. के लिए जॉब के बहुत अवसर उपलब्ध हैं। सी.एस. की प्रवेश–परीक्षा देने के लिए विद्यार्थी को 12वीं की परीक्षा उत्तीर्ण करना अनिवार्य है। साथ ही, सी.एस. फाउण्डेशन कोर्स के लिए पूर्व पंजीयन आवश्यक है। सी.एस. की परीक्षा प्रतिवर्ष जून व दिसम्बर में इंस्टीट्यूट ऑफ कम्पनी सेक्रेटरीज द्वारा आयोजित की जाती है। यह परीक्षा उत्तीर्ण होने पर सी.एस. की डिग्री दी जाती है। सी.एस. करने के लिए कुल फीस मात्र 8000/–रुपये हैं। कम्पनी सेक्रेटरी की परीक्षा में एक्सीक्यूटिव प्रोग्राम की परीक्षा पास करने के पश्चात् विद्यार्थी को 15 महीनों की आर्टिकलशिप अनिवार्य होती है, उसके पश्चात् ही विद्यार्थी फायनल प्रोफेशनल प्रोग्राम परीक्षा के योग्य होता है। प्रोफेशनल प्रोग्राम के पास करने के पश्चात् ही छात्र कम्लीट सी.एस. होता है।

–सी.एस.सी. के सौजन्य से

बचपन

हँसता बचपन, गाता बचपन,
भोला–सा तुतलाता बचपन।
नटखट–नन्हे छौने जैसा,
अकसर लगे खिलौने जैसा।
देकर प्यार परखिये उसको,
खूब खरा है सोने जैसा।
झूठ–मूठ हो रूठ के अक्सर,
नखरों–सा इठलाता बचपन,
लड्डू–पेड़े जैसा मीठा,
थोड़ा सच्चा थोड़ा झूठा।
हैं मासूम मेमने जैसा,
नन्हा–मुन्ना और अनूठा,
है पतंग–सा उड़ने वाला,
लहराता वह जैसा परचम,
बाजे–सा बजता है हरदम।
छूकर देखो उसके मन को,
मखमल जैसा, नरम मुलायम,
खुशबू अपनी सारे जग में,
फूलों–सा बिखराता बचपन।

–शुभम यादव
कक्षा– 10

लिखें। यदि छोटा बच्चा पेन माँगता है, तो उसे रिफिल वाला पेन दिलायें और बतायें कि बिना रिफिल वाले पेन कितने खतरनाक हैं। रिफिल वाले पेनों में भी आप कम–से–कम छः बार रिफिल का उपयोग करें।

यह ठोस प्लास्टिक से बने हुए पेन सस्ते के चक्कर में लगभग सभी खरीदते हैं और इनके उपयोग के पश्चात् इन्हें चाहे कहीं फेंक देते हैं । इससे विद्या का अपमान होने के साथ ही पर्यावरण–प्रदूषण भी होता है। कुछ लोग ऐसे हैं, जिन्होंने पूरा पैकेट (प्लास्टिक पेन का) खरीद लिया है, तो उन पेनों को आप खाली होने के पश्चात् जतन से रखिये और कबाड़ेवाले को दे दीजिये। कबाड़ी ही एक ऐसा शख्स होता है, जो सच्चा पर्यावरण–रक्षक होता है। आप स्कूल से घर जाते वक्त बहुत–से कबाड़ियों को देखते होंगे। यदि खाली पेन इनके ठेलों में डाल दिया जाये, तो वह मना नहीं करेगा।

मैं आप सभी से, जिन तक यह लेख पहुँच रहा है, विनम्र अनुरोध करता हूँ कि यह ठोस प्लास्टिक वाले पेन बन्द कर दें। छोटे बच्चों को भी इनसे होने वाले दुष्परिणाम समझाइये और पर्यावरण के प्रति हो रहे अत्याचारों के प्रति एक अच्छे नागरिक का दायित्व निभायें। यदि आज से ही आप यह पेन बन्द कर देंगे, तो वह दिन दूर नहीं, जब इन पेनों के उद्योग बन्द हो जायें।

यदि आप इन पेनों का उपयोग बन्द कर देंगे, तो इनका निर्माण ही नहीं होगा और निर्माण नहीं होगा, तो पर्यावरण भी प्रदूषित नहीं होगा और पर्यावरण प्रदूषित नहीं होगा, तो आपका जीवन प्रदूषित नहीं होगा। बीमारियाँ भी नहीं बढ़ेगी।

–केशव लाहौरी (व्याख्याता अंग्रेजी)

बधाई !

बरकतउल्ला विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय–सेवा–योजना सलाहकार–समिति के सदस्य चुने जाने पर विद्यालय के प्राचार्य श्री शैलेन्द्र कुमार दीक्षित जी को हार्दिक बधाई.....

उस आनन्द को महसूस करके देखो.....

v विद्या के मन्दिर में प्रवेश करते समय सुखद अनुभूति अतुल्य है, वहाँ अध्ययन करना किसी भाग्य से कम नहीं। हम विद्यालय जाते हैं और पढ़ाई करते हैं। हमारे विचार से यह कोई खास बात नहीं, परन्तु शिक्षा का महत्त्व उन बच्चों से पूछो, जो विद्यालय से कोसों दूर है। उस आनन्द को महसूस करके देखो, जब कोई गरीब बच्चा अपने मन में विद्यालय जाने के स्वप्न को सजाता है।

v मन लगाकर अध्ययन करना विद्यार्थी का प्रमुख कर्त्तव्य है। प्रथम स्थान प्राप्त करने पर क्या मिलता है। काँच का टुकड़ा (शील्ड) या छोटी–सी उपयोगी वस्तु (पेन, बॉक्स) आदि। हमारे विचार में कुछ खास नहीं, क्योंकि हम तो धनवान् हैं। हमारी नजरों में इनका क्या मूल्य ? इसका मूल्य तो उस विद्यार्थी से पूछिये जो सुबह चार बजे उठकर पढ़ाई करता है। रात को ग्यारह बजे तक तेल के दीपक में पढ़ता है। प्रथम स्थान प्राप्त करके, भले ही उसे पुरस्कार हेतु कोई छोटी वस्तु मिले, उस विद्यार्थी के आनन्द की सीमा माउण्ट एवरेस्ट की चोटी से कम नहीं।

v 'शिक्षक–शिक्षिकाओं का सम्मान करना चाहिए, यह शिक्षा दी जाती है हमें। हमें तो अपने गुरुओं के भाँति–भाँति के नाम रखने के अलावा कोई काम नहीं। परिश्रम–शील विद्यार्थी के मन में शिक्षक का सम्मान ईश्वर से कम नहीं हेाता। ऐसे ही विद्यार्थियों के दृष्टान्त देकर गुरुजन हमें शिक्षा देते हैं और अपने आप में गर्व महसूस करते हैं।

v सुबह से शाम तक कठोर परिश्रम करके एक पिता अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के सपने देखता है और विद्यालय का शुल्क भरने के लिए रुपये–पैसे देता है और बच्चा किसी चौराहे पर उन पैसों से बीड़ी–सिगरेट पीता है, दोस्तों को तम्बाकू खाने के लिए निमन्त्रित करता है। पिता के उस सपने को तोड़कर, उनकी आशाओं पर पानी फेरकर क्या मिलता है, उनको? अपने माता–पिता द्वारा सजाये गये सपनों के अन्धकारयुक्त पथ पर मेहनत से एक किरण डालकर देखो। माता–पिता को जो आनन्द मिलता है, मानो उनका जीवन सार्थक हो गया है और उस दुलार को महसूस करो, जो उनके द्वारा दिया जाता है। सचमुच उस आनन्द की तुलना ही नहीं की जा सकती है.....।

इस प्रकार के आनन्दों की अनुभूति करने वाले वाले एक

विद्यार्थी की कलम से।

बच्चों की कलम

'बिटिया'

घर को महकाती बिटिया,
हर काम बनाती बिटिया।
लेना है गाड़ी का टिकट,
भीड़ पड़ी है भारी विकट,
लगी लम्बी लेन,
हो छूटने वाली ट्रेन,
टिकट विषम परिस्थिति में भी,
झट से लाती बिटिया।
गैस की टंकी पड़ी है खाली,
कह रही कैसे रोटी बनायें,
अब क्या तुम्हारे हाड़ जलायें,
गैस–प्राब्लम पल–भर में ही,
हल कर लाती बिटिया।
कण्ट्रोल का राशन लानें,
धनतेरस का बासन चानें,
सुई और सुरौती चानें,
लक्ष्मी–पूजन की पोथी चानें,
भाव–ताव करके सब चीजें,
लेकर आती बिटिया।
पक्की उसकी हुई सगाई,
कन्यादान की बारी आई,
गाँव भर ने पाँव पखारे,
जब बिदाई की बेला आती,
सबको रुलाती बिटिया।
बच्चों की माँ जब हुई बीमार,
तेज भयंकर चढ़ा बुखार,
पुत्रों ने माँ से मुँह फेरा,
करें न कोई सेवा–सँवार,
ससुराल से माँ की सेवा,
करने आती बिटिया।
कभी बेटी, कभी बहिन है,
बिटिया मौके पर ज्वाला बन जाती,
वैसे बड़ी शीतल है बिटिया,
कभी पीएम कभी प्रेसीडेण्ट,
बन जाती है बिटिया।
बेटों पर क्यों जश्न मनाते,
पलकर वही काल बन जाते,
बिटियाँ सहारा बन जाती हैं,
गर्भ में ही क्यों उन्हें मिटाते,
दुनिया में आने दो मुझे भी,
अर्ज सुनाती बिटिया।

–कु. निधि मीना
कक्षा– 12 (वाणिज्य)

"गुरु की महिमा"

गुरु की महिमा क्या बतलाऊँ,
गुरु से तो यह संसार है,
गिन न पाऊँ इतने सारे,
हम पर गुरु के उपकार हैं।
पढ़ना लिखना भी सिखलाया,
जीने की एक राह दिखायी,
सदा प्रेरणा बन कर मेरी,
मुश्किल हर आसान बनायी।
गुरु को सदा नमन करता हूँ,
उनका ही भजन करता हूँ,
सीखों की राहों पर चल कर,
श्रद्धा–सुमन अर्पित करता हूँ।

– अजय सेन
कक्षा– 12 (गणित)

पुस्तक बोली

बच्चों ने अब पुस्तक खोली,
उसमें से कविता भी डोली।
पाठ ने भी मुस्कान बिखेरी,
गणित की भी बिछी रंगोली।

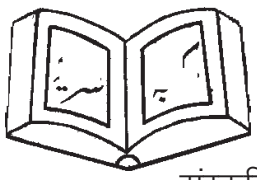

महापुरुष का पाठ है उसमें,
धरती का भी राज है उसमें।
विज्ञान की है खोज सुहानी,
खेती की है कुमकुम–रोली।
संस्कृति की पहचान है पुस्तक,
ज्ञान की आवाज है पुस्तक।
खोलो मुझको पुस्तक बोली।
पुस्तक हमसे कुछ नहीं लेती,
पढ़ो–लिखो तो सब कुछ देती।
मुझको पढ़कर महान् बनें सब,
हँसते–हँसते पुस्तक बोली।

–सौरभ रघुवंशी (कक्षा– 6)

इंसान की सोच

तीन वर्ष की उम्र में वह समझता था कि उसके पिता दुनिया के सबसे ताकतवर इंसान हैं। 9 वर्ष का होने पर उसके पिता सबसे बड़े ज्ञानी भी लगने लगे, लेकिन जब वह किशोरावस्था में आया, तो उसने महसूस किया कि उसके पिता से ज्यादा समझदार तो उसके मित्रों के पिता हैं। वह युवास्वथा में आया, तो उसे लगा कि उसके पिता को अपनी सोच बदलनी चाहिए। जब वह नौकरी करने लगा, तब उसने पिता से सलाह लेना बन्द कर दिया, उसका मानना था कि उसके पिता हर काम में कमी निकालते हैं।

शादी और बच्चे होने के बाद उसे महसूस हुआ कि पिता से हल्की–फुल्की सलाह ली जा सकती है। जब वह अधेड़ उम्र में आया, तो उसे लगा कि पिता कुछ जरूरी मामलों में अच्छी सलाह दे सकते हैं। 50 पार करते ही उसने फैसला किया कि वह पिता की सलाह के बिना कुछ नहीं करेगा, क्योंकि वे दुनिया के सबसे समझदार व्यक्ति हैं।

लेकिन वह अपने फैसले पर अमल नहीं कर पाया, क्योंकि उसके पिता संसार से चल बसे।

कथा–मर्मः–उम्र के साथ क्रमशः जीवन की समझ आती है। हर उम्र के अनुभव हमारे विचारों को बदलते रहते हैं। अपने अनुभवों से सीख लेना अच्छी बात है, लेकिन बड़ों के अनुभवों का सम्मान करना भी सीखना चाहिए, वरना पछताना पड़ता है।

–कु. प्रियंका सोनी
कक्षा– 12(गणित)

आज का आदमी

आश्रय देने पर, सिर चढ़ जाता है।
आदर करने पर, खुशामद समझता है।
विश्वास करने पर, हानि पहुँचाता है।
प्यार करने पर, आघात करता है।
उपदेश देने पर, मुड़कर बैठ जाता है।
उपकार करने पर, अस्वीकार करता है।
क्षमा करने पर, दुर्बल समझता है।

–कु. राशि श्रीवास्तव, कक्षा– 9

अनोखा–पत्र

प्रिय मित्र,

नमस्कार!

तुम्हारा पत्र मिला, पढ़कर खुशी हुई कि तुम कक्षा में प्रथम आये हो और यह पढ़कर दुःख हुआ कि ***तुम बीमार हो। मैं तो भगवान् से यही प्रार्थना करता हूँ कि*** तुम जल्दी ठीक हो जाओ। भगवान् न करे, ***तुम्हें कैंसर हो।*** मेरे प्यारे दोस्त मेरी दुआएँ तुम्हारे साथ हैं। ***मैं चाहता हूँ कि भगवान् तुम्हें जल्दी*** अच्छा कर दे। मेरे प्यारे दोस्त! कुछ हो, तो मुझे ***अपने पास बुला ले। मैं तो तुम्हें तन–मन–धन से*** बचाने का प्रयत्न करूँगा और तुम्हारी बीमारी को हर तरह से ***समाप्त करने की कोशिश करूँगा। मुझे जल्दी समाचार देना कि तुम्हारे*** स्वास्थ्य में सुधार हो गया है और दुःख–दुविधा के ***दिन पूरे हो चुके हैं। (बोल्ड अक्षर पढ़ें)***

–राहुल रघुवंशी
कक्षा– 11 (गणित)

भ्रष्टाचारी

फैल रहा है भ्रष्टाचार,
व्याकुल हो गयी जनता सारी।
पढ़े–लिखे फिरते नर–नारी,
बढ़ती जाती बेरोजगारी।
पैसे बिना न होता काम,
नौकरी पर भी लगते दाम।
जिसकी लगती नौकरी यार,
लगते नोट पचास हजार।
सभी जगह पैसे का खेल,
चाहे पुलिस हो या हो जेल।
लेने जाओ राशन–तेल,
कंकड़–पत्थर का होता मेल।
कैसे नेता हैं ये यार,
मिलकर, करते भ्रष्टाचार।
जनता घुट–घुट कर जीती है,
ये भाई कैसी राजनीति है।

–सुरेन्द्र साहू,कक्षा–10

इन्हें भी स्थान दे जीवन में

प्रेम करो – भगवान से,
सेवा करो – माँ–बाप की,
पूजा करो – देवों की,
मेहनत करो – लगन से,
आदर करो – बड़ों का,
प्यार करो – छोटों को,
दया करो – गरीबों पर,
माफ करो – गलती करने वाले को,
डरा करो – ईश्वर से,
मित्रता करो – ईमानदार से,
आजमाओ – मुसीबतों में,
बचा करो – गलत कामों से,
रक्षा करो – स्वयं के शरीर की,
याद करो – अपनों को,
दान करो – निर्धनों को,
बोला करो – हमेशा सच को,
खर्च करो – नेक कामों में।

–पार्थसिंह ठाकुर
कक्षा– 7

बेटी मुस्कान

नन्हीं–नन्हीं कलियों जैसी,
दिखे साग की डलियों जैसी।
मन्द–मन्द मुस्काये ऐसी,
लगे सुन्दर परियों जैसी।
रोटी खाती तुनक–तुनक कर,
गुस्सा होती भनक–भनक कर।
चिल्लाये वो दादी जैसी,
मुस्काये वो नानी जैसी।
ऐसी सुन्दर बेटी मेरी,
जिसके प्यारे हैं दो कान।
है मोटी–सी एक नाक,
जिसका नाम है मुस्कान।

शिवानी दाँगी
कक्षा–6

एक पहाड़ा

एक अकेला, दो का मेला।
तीन तिगाड़ा खेल बिगाड़ा।
चार चौकड़ा फैला भाड़ा।
आँगन में घुस आया पाड़ा।
पाँच–पंच का बजा नगाड़ा।
कोयल बोली, शेर दहाड़ा।
छह की छकड़ी बना अखाड़ा।
कौन चुकाये घर का भाड़ा।
सात मिले तो ताड़ उखाड़ा।
आई गर्मी भागा जाड़ा।
आठ अंक ने खूँटा गाड़ा।
मच्छर ने शैतान पछाड़ा।
नौ ने भेदा सभी का ताड़ा।
किसकी हिम्मत करे पहाड़ा।
दस का सीधा एक पहाड़ा।
चलो देखकर आगे खाड़ा।

–कु. मधु रघुवंशी
कक्षा– 5

जरा सोचिए!

1. बुद्धि को खा जाता है–क्रोध,
2. ज्ञान को खा जाता है–घमण्ड,
3. पाप को खा जाता है– प्रायश्चित,
4. ईमान को खा जाता है– लालच,
5. इंसाफ को खा जाती है–रिश्वत,
6. आयु को खा जाती है–चिन्ता।

–अमन विश्वकर्मा, कक्षा– 3

प्रार्थना

हमें ज्ञान दो हे भगवान्,
प्रतिदिन करें तुम्हारा ध्यान।
कभी नहीं मन में हो अभिमान,
हमसे सबका हो कल्याण।
माता और पिता का मान,
करें हम सबका सम्मान।
करें पढ़ाई पायें ज्ञान,
सदा रहे सेवा का ध्यान।

सपना रघुवंशी,कक्षा– 5

गिलहरी

अरे गिलहरी सुन–सुन–सुन,
दाना खाजा चुन–चुन–चुन।
रेशम जैसी पूँछ तुम्हारी,
लगती है तो काली धारी।
फुदक–फुदक कर चलती हो,
कितनी प्यारी लगती हो।

–महक मिश्रा
कक्षा–4

हरियाली

सर्वत्र बिछी हरियाली है,
हरजन के मुख पर लाली है।
अब धरती–अम्बर की छटा देख,
खुशहाली–ही–खुशहाली है।
छितराया है वैभव अनन्त।
अब धरती पर आया बसन्त।

– अरूण मैना
कक्षा– 5

Teachers and Students

Students are lakes,
Teachers are river.
Students are birds,
Teachers are sky.
Students are sucess,
Teachers are way.
Students are plants,
Teachers are soil.
Students are human,
Teachers are life.
Students are future,
Teachers are present.
So, respect the teachers,
and make life better.

-Ku. Sanskrati Dixit
Class 7th (Dolphin)

Techniques to envelop will power

1. Decide and be firm about your goal.
2. Determine what you want to achieve.
3. Prepare your mind to achieve your goal by putting your soul and heart into it.
4. Prepare yourself mentally.
5. Mould your will power to work hard and be loyal to it.
6. Realise the importance of time and manage it well.
7. Don't spend more time in making up your mind.
8. Get into action and be committed to achieve your goal.
9. Keep your eyes upon the goals only.

-Ku. Roshni rajput.
Class 12th (Maths)

FULL FORM

1.	A.I.D.S.	= Acquird Immune Deficiency Syndrome
2.	A.T.M.	= Automatic Teller Machine.
3.	B.S.F	= Border Security Force.
4.	C.A.D.	= Computer Aided Design
5.	C.B.I.	= Central Bureau of Investigation
6.	C.D.M.A.	= Code Division Multilple Access.
7.	C.I.D.	= Criminal Investigation Department.
8.	E.C.G.	= Electro Cardio Gram
9.	W.H.O.	= World Health Organization
10.	N.C.C.	= National Cadet Core.

- Ku Sneha Sharma
Class 8th

INVENTIONS AND DISCOVERIES

1. Aeroplane	-	1903, Wright Brother (America)
2. Bicycle	-	1940, Macmillan (Scotland)
3. Diesel Engine	-	1893, Diesel (Germany)
4. Television	-	1926, J.L.Baird (England)
5. Military Tank	-	1974, Winton(England)
6.Machine Gun	-	1861, Gatling
7. Revolver	-	1937, Colt (America)
8.Radium	-	1903, Madame Curie (France)
9. Telephone	-	1876, Grahm Bell (America)
10. Type Writer	-	1714, Henry Mill
11. Electric Battery	-	1807, Volta
12. Neutron	-	1932, Chadwick
13. Gas stove	-	1855, Bunsen (Germany)
14. Stell	-	1858, Bessemer (England)

- Kapil Raghuwanshi
Class 12th (maths)

The best day "Today"

Hardest thing to do	-	to begin
The greatest handicap	-	Fear
Easiest thing to do	-	Finding faults in other
Most useless asset	-	Pride
The greatest mistake	-	giving up
The greatest stumbling block	-	Egoism
The greatest comfort	-	work well done
Most disagreeable person	-	the complainer
Work bankruptly	-	loss of enthusiasm
Greatest need	-	comman sence
Meanest feeling	-	Regret at another's success.
Best gift	-	Forgiveness
The hardest and most painful	-	to accept defeat.
The greatest moment	-	Death
The greatest knowledge	-	Experince.
The greatest thing	-	love.
The greatest success in the World	-	peace of Mind.

- Rahul Raikwar
Class- XI (Maths)

क्या आप जानते हैं ?

1. शरीर की सबसे छोटी हड्डी का नाम– स्टेप्स है, जो कान में होती है।
2. हमारे हृदय में इतनी शक्ति होती है कि वह रक्त को 30फीट तक फेंक सकता है।
3. हमारी जीभ लगभग नौ हजार तरह के स्वाद हमें दे सकती है।
4. मक्खी की स्वाद–ग्रन्थि पैरों में होती है।
5. मछली की एक सच्चाई, मछली वहीं जाकर अण्डे देती है, जहाँ वह स्वयं पैदा हुई थी। भले ही उसे हजारों मील का रास्ता तय करना पड़े और इस तरह की यात्रा से मछली नदी, समुद्र दोनों में ही रह सकती है।
6. घोंघा अपने पैरों से साँस लेता है।
7. ऑक्टोपस के तीन दिल होते हैं।
8. जन्म से लेकर मृत्यु तक हमारी आँखों के आकार में कोई अन्तर नहीं आता।
9. 190 डिग्री से ज्यादा ठण्डा करने पर हवा भी पानी में बदल जाती है।
10. 1979 में एरिक्सन नाम की कम्पनी ने पहले मोबाइल फोन का निर्माण किया।
11. इंग्लैण्ड के एसेक्स विश्वविद्यालय में संलग्न रिसर्च के लिए ऐसे केमरे का प्रयोग किया जाता है, जो प्रति सेकेण्ड 300 करोड़ चित्र उतार सकता है।
12. नदी के मुकाबले समुद्र में तैरना आसान है, क्योंकि समुद्र के जल में नमक घुला होने के कारण समुद्री जल का घनत्व अधिक होता है।
13. भारत में पहली रेल की शुरुआत लॉर्ड डलहौजी के समय 16 अप्रैल, 1953 को बोरीबन्दर (मुम्बई) से ठाणा के मध्य चलने से हुई।
14. बारिश की बूँद का आकार लगभग 0.02 इंच से 0.31 इंच तक होता है तथा बादल फटने से कुछ समय में ही अत्याधिक वर्षा 1 घण्टे में 100 मिमी. या 3.94 इंच से अधिक वर्षा होती है।
15. अगर इंसान की सभी रक्त–वाहिनियों को सीधाकर उनको जोड़ दिया जाये, तो वे 1,00,000 मील लम्बी हो जायेंगी। मतलब, उनकी लम्बाई विषुवत रेखा के 4 चक्करों बराबर हो जायेगी।

–शुभम विश्वकर्मा
कक्षा–9

मध्यप्रदेश–देश में प्रथम स्थान

1. देश में सर्वाधिक पवन–चक्कियाँ मध्यप्रदेश में हैं।
2. मध्यप्रदेश में बाघों की संख्या सर्वाधिक है।
3. भारत का प्रथम पर्यटन–नगर शिवपुरी को घोषित किया गया है।
4. विश्व का सबसे बड़ा सौर–ऊर्जा–संयन्त्र भोपाल में स्थित है।
5. हीरा–उत्पादन में प्रदेश का पहला स्थान है।
6. गौ–हत्या सबसे पहले मध्यप्रदेश में बन्द हुई।
7. बेरोजगारी–भत्ता सर्वप्रथम मध्यप्रदेश ने देना शुरु किया था।
8. पंचायत–चुनावों में महिलाओं को 50% आरक्षण सर्वप्रथम मध्यप्रदेश ने दिया।
9. उज्जैन–स्थित सोयाबीन–संयन्त्र एशिया का सबसे बड़ा सोयाबीन–संयन्त्र है।
10. भोपाल की ताजुल–मस्जिद देश की सबसे बड़ी मस्जिद है।
11. मैंगनीज–उत्पादन में प्रदेश का प्रथम स्थान है।
12. देश में सर्वाधिक राष्ट्रीय उद्यान एवं अभ्यारण्य मध्यप्रदेश में हैं।
13. विश्व में उज्जैन एकमात्र स्थान है, जहाँ 21 जून को सूर्य 90^0 पर लम्बवत् होता है।
14. देश का प्रथम मोबाइल–बैंक खरगौन जिले में म.प्र. में कार्यरत है।
15. महाविद्यालयों में सेमेस्टर–प्रणाली लागू करने वाला देश का पहला राज्य मध्यप्रदेश है।

–श्रीकान्त नेमा
कक्षा– 12वी (वाणिज्य)

History of chess

It is through that chess orginesed in china or India more than 1, 400 years ago. It spread to North America and was introduced to Europe after the Muslim Conquest of Spain. Early pieces were based on an Asian army, with elephant chariots and footsoldiers.

- Dhruv Upadhyay
Class- 5th (Dolphin)

बूझो तो जानें

पहेलियाँ

1. काली है पर काग नहीं, लम्बी है पर नाग नहीं,
   बल खाती है पर डोर नहीं, बाँधते हैं पर डोर नहीं।
2. बीमार नहीं रहती, फिर भी खाती है गोली,
   बच्चे,बूढ़े डर जाते, सुन इसकी बोली।
3. कल बनता धड़ के बिना, मल बनता सिरहीन,
   थोड़ा है पैर कटे तो, अक्षर केवल तीन।
4. हमने देखा अजब एक बन्दा,
   सूरज के सामने रहता ठण्डा,
   धूप में जरा नहीं घबराता,
   सूरज की तरफ मुँह लटके जाता।
5. पैर नहीं पर चलती है, कभी न राह बदलती है।
   नाप–नाप कर चलती है, तो भी न घर से टलती है।

उत्तर–1. चोटी 2. बन्दूक 3. कमल 4. सूरजमुखी 5. घड़ी।

–कु. आस्था दुबे, कक्षा–5

---

1. शेर हूँ पंजाब का, आजादी सेनानी,
   बूढ़ा था पर ढूँढो तो तुम मेरा एक सानी।
2. आनन्द भवन मेरा घर, कमला मेरी माता,
   गुरु गाँधी और मातृभूमि भारत माता।
3. तन में और मन में, बसे सबके कण–कण में,
   हर मुसीबत में याद करके, हर क्षण–क्षण में।
4. तिलक माथे का नहीं, हूँ पूरे देश का,
   गंगाधर हूँ, शिव नहीं पर्वत–प्रदेश का।
5. एक बहादुर ऐसा वीर, गाना गाकर मारे तीर।
6. काला घोड़ा गोरी सवारी, एक के बाद, एक की बारी।
7. राजा रानी सुनो कहानी, एक घड़े में दो रंग का पानी।
8. देश की मशाल था वह, भारत माँ का लाल था वह,
   अंग्रेजों को थर्राने वाला, हँस कर फाँसी पर चढ़ जाने वाला
   बोलो वह लाल कौन था?
9. अंग्रेजों के हाथ न आया, भारत का वह वीर कहलाया,
   उसे मात्र आजादी प्यारी, अन्तिम गोली स्वयं को मारी।
10. बिल्ली की पूँछ हाथ में, बिल्ली रहे इलाहाबाद में।

उत्तर (1) लाला लाजपत राय (2) जवाहरलाल नेहरू (3) ईश्वर
(4) बाल गंगाधर तिलक (5) मच्छर (6) रोटी (7) अण्डा
(8) सरदार भगतसिंह (9) चन्द्रशेखर आजाद (10) पतंग

–शिवम रघुवंशी, कक्षा–5

1. पक्षी एक देखा अलबेला,
   पंख बिना उड़ रहा अकेला।
   बाँध गले में लम्बी डोर,
   नाप रहा है, अम्बर का छोर।
   उत्तर– पतंग
2. वह क्या है?
   जो होता छोटा, पर कहलाता बड़ा।
   उत्तर– दही बड़ा
3. सिर पर कलगी, पर मैं न चन्दा
   गरजे बादल नीचे बन्दा।
   उत्तर– मोर
4. लकड़ी के घोड़े पर लोहे की लगाम
   उत्तर–दरवाजा
5. लाल गाय लकड़ी खाय,
   पानी पीये मर जाये।
   उत्तर– आग
6. तीन रंग के सुन्दर पक्षी,
   नील गगन में भरे उड़ान ,
   यह है सबकी आँखों का तारा,
   हम सब करते इसका सम्मान।
   उत्तर– तिरंगा झण्डा
7. काली नदी सुहावनी, पीले अण्डे दे,
   जो आये आदमी, सभी समेट ले।
   उत्तर– पकौड़े
8. चार चिड़ियाँ, चार रंग
   पिंजड़े में, एक संग।
   उत्तर– पान
9. छोटे–से है मटकूदास,
   कपड़ा पहने सौ–पचास।
   उत्तर– प्याज
10. चार ड्राइवर एक सवारी,
    उसके पीछे जनता भारी।
    उत्तर– मुर्दा

–आर्यन रघुवंशी,
कक्षा– 6

नन्ही कूची

Rajeev Choudhari
5th (Dolphin)

ISHU KATAREY
4th (Dolphin)